पंचम अध्याय
नासिरा शर्मा की कहानियों में प्रतिबिंबित नारी मनोविज्ञान

पंचम अध्याय : नासिरा शर्मा की कहानियों में प्रतिबिंबित नारी मनोविज्ञान

मनुष्य ने जिज्ञासा के कारण नए-नए प्रयोग किए हैं | हर विषय के तह तक जाकर उसका अध्ययन करने का प्रयास किया हैं | उसी मनुष्य ने आदिम काल से लेकर आज तक मनुष्य का विकास कैसे होता गया? इसका भी अध्ययन किया है | मनुष्य का शरीर आरंभ से ही जिज्ञासा का विषय रहा हैं | उसने मनुष्य शरीर के सभी अवयवों का अध्ययन किया हैं | लेकिन मनुष्य का मन क्या है? यह वह अब तक जान नहीं पाया हैं | मनुष्य का व्यवहार परिस्थितियों के अनुसार तथा उसकी मानसिक स्थिति पर निर्भर करता हैं | यह कहा नहीं जा सकता कि मनुष्य किन परिस्थितियों में कौन-सा वर्तन करेगा? लेकिन विशेष परिस्थिति में विशेष प्रकार का वर्तन करता हैं | जैसे कि जब वह खुश होता हैं तो सीटी बजाता है, गाना गाता है | लेकिन दुख के समय मायूस बैठा रहता है या रोता रहता है.क्रोध के समय चिल्लाता है आदि वर्तन मानसिकता पर निर्भर करते हैं |

मनुष्य के वर्तन में जो परिवर्तन आता है, वह परिवर्तन क्यों आता हैं? इन कारणों को ढूँढने का काम मनोविज्ञान के अंतर्गत किया जाता है | डॉ.सूदेश बन्ना के अनुसार "आज का कलाकार अनुभूतियों का, चिंतन प्रक्रिया का विश्लेषण करता हैं | संघर्षो में उलझे व्यक्तियों की समस्याओं, सामाजिक जटिलताओं के सूक्ष्म अन्वेषण की प्रवृत्ति, वर्तमान साहित्य की... उसका मनोवैज्ञानिक उद्‌घाटन साहित्यकार व्यक्तिवादी धरातल पर करता हैं |"[1] आज का कलाकार भोगे हुए यथार्थ तथा अनुभवों से चिंतन करता हैं | इस चिंतन से वैज्ञानिक विश्लेषण करता हैं | वर्तमान साहित्य में संघर्षो में उलझे व्यक्ति की समस्या, जटिलता का सूक्ष्म अन्वेषण किया जाता है | साहित्यकार पात्र के आधार पर उसके मानसिक झंझावातों का चित्रण करता हैं | मनुष्य की प्रवृत्ति मनुष्य के आचार-विचार, चित्तवृत्तियों तथा चिंतन से प्रभावित होती हैं | साहित्यकार पात्र के मनोविश्लेषण के समय खुद को उस पात्र की जगह रखकर देखता है | जिससे पात्र की मानसिकता का विश्लेषण होता हैं |

5.1. मनोविज्ञान क्या है? :

मनोविज्ञान शब्द दो ग्रीक शब्दों - 'सायकी' (Psyche-Soul) और 'लॉगॉस' (Logos-Soul) से 'सायकॉलॉजी' (Psychology) शब्द बना है। "Psyche का अर्थ 'आत्मा' से होता है और Logos का अर्थ 'विज्ञान' से। इस प्रकार का शाब्दिक अर्थ 'आत्मा का विज्ञान' है।"[2]

भारतीय मानसशास्त्र को 'जीवन का तत्वज्ञान' कहते थे। भारतीयों ने मानसशास्त्र का अध्ययन बहुत पहले से करना शुरू किया है। मनोविज्ञान व्यक्ति की मानसिक शक्तियाँ जैसे - चेतन, स्मृति, कल्पना आदि का वैज्ञानिक परीक्षण करके उसका विकास करता है। भविष्य के लिए योजनाबद्ध कर व्यक्ति की उन्नति के साथ प्रस्तुत करता है। देवराज उपाध्याय लिखते हैं - "बीसवीं शताब्दी के ज्ञान वृक्ष की सबसे तरुण, नवजवान, स्फूर्त, कोमल तथा लचीली शाखा 'मनोविज्ञान' है। ...उसके पास जीवन की सब समस्याओं का हल करने की शक्ति हैं। ...उनके समाधान और निराकरण के समाधान मनोविज्ञान के पास है।"[3]मनोविज्ञान के अध्ययन से ही व्यक्ति के जीवन में आनेवाली सभी समस्याओं का निराकरण किया जाता हैं तथा उन समस्याओं की निर्मिति का कारण भी खोजा जाता हैं। मनोविज्ञान का सीधा संबंध व्यक्ति के हृदय और मस्तिष्क से रहता हैं।

5.2. मनोविज्ञान की परिभाषाएँ :

1. मिथिलेश रोहतगी :

"मनोविज्ञान मन संबंधी विशिष्ट ज्ञान का प्रस्तोतर है। मन अदृश्य, अस्पष्ट, अस्पृश्य, विवादास्पद और अनुमानित होता है। मन:स्थिति का विश्लेषक व्याख्याता मनुष्य का व्यवहार है। अत: मनोविज्ञान मनुष्य जीवन के व्यवहार का विश्लेषक है।"[4]

2. डॉ.देवराज उपाध्याय :

"मानव के प्रति मानव की चिंता को समझने, समझाने, देखने, बूझने के प्रयत्न को मनोविज्ञान (Psychology) का अध्ययन कहते हैं।"[5]

3. गोविंद चातक :

"मन से संबंधित वह विज्ञान जिसमें मनुष्य की मनोवृत्तियों, व्यवहारों और विभिन्न प्रभावों का विवेचन होता है।"[6]

4. डॉ.श्यामसुंदर दास :

"वह शास्त्र जिसमें चित्तवृत्तियों का विवेचन होता हैं। वह विज्ञान जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि मनुष्य के चित्त में कौन-सी वृत्ति कब, क्यों और किस प्रकार उत्पन्न होती हैं। इन चित्त की वृत्तियों की मीमांसा करनेवाला शास्त्र है।"[7]

5. श्री.शरण :

"मानसिक वृत्तियों का परीक्षण द्वारा प्रयोगात्मक सिद्धांतों की विवेचना करनेवाला शास्त्र।"[8]

6. जेम्स ड्रेवर :

"मनोविज्ञान वह शुद्ध विज्ञान है जो मानव तथा पशु के उस व्यवहार का अध्ययन करता है जो व्यवहार उसके अंतर्गत के मनोभावों और विचारों की अभिव्यक्ति करता हैं। जिसे हम मानसिक जगत् कहते हैं।"[9]

7. सी.वुडवर्थ :

"मनोविज्ञान वातावरण के अनुसार व्यक्ति-व्यक्ति के कार्यो का अध्ययन करनेवाला विज्ञान है।"[10]

8. चार्ल्स ई.स्किनर :

"मनोविज्ञान जीवन की परिस्थितियों के प्रति प्राणी की प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करता हैं। प्रतिक्रियाओं अथवा व्यवहार से तात्पर्य प्राणी की सभी प्रकार की प्रतिक्रियाओं, समायोजन कार्यो तथा अनुभवों से हैं।"[11]

5.3. मनोविज्ञान का उद्देश्य :

"मनुष्य के व्यवहारों का अध्ययन करके उसके व्यवहारों के संदर्भ में यह सत्यता एवं विश्वसनियता से भविष्यवाणी करना की दी हुई दशाओं में उनका रूप क्या होगा? एवं यह चेष्टा करना है कि मनुष्य के व्यवहारों पर कैसे नियंत्रण रखा जा सकेगा। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए मनोवैज्ञानिकों के सम्मुख कुछ समस्याएँ आती हैं। जैसे -

1. मनुष्य के व्यवहारों को समझना
2. मनुष्य के व्यवहारों का भविष्य में जो रूप होगा इसका पता लगाना
3. मनुष्य के व्यवहार पर नियंत्रण रखना।"[12]

"कार्य और व्यवहार द्वारा व्यक्ति के प्रत्यक्ष रूप को देखा और परखा जा सकता है, परंतु उसके व्यक्तित्व का परोक्ष रूप इतना महत्त्वपूर्ण होता हैं कि वहाँ तक पहूँचने के लिए मनोविश्लेषण का सहारा लेना आवश्यक हो जाता है |"[13] व्यक्ति के प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप को जानना मनोविज्ञान में महत्त्वपूर्ण है | उसे जाने बिना मनुष्य की क्रियाओं का पता चलना मुश्किल हैं | मनोविज्ञान का प्रमुख उद्देश्य मनुष्य के मन में चल रही हलचलों का पता लगाना और मनुष्य की क्रियाओं के कारण जानना हैं | व्यक्ति किसी प्रसंगानुसार वही क्रिया क्यों करता है यह जान लेना मनोविज्ञान है |

5.4. नारी मनोविज्ञान -

इस अध्याय के पूर्व नारी मनोविज्ञान को जानना महत्त्वपूर्ण है | "किसी भी पात्र के व्यक्तित्व के दो पक्ष होते हैं - बाह्य और आतंरिक पक्ष | बाह्य व्यक्तित्व के अंतर्गत उसका आकार, रूप, वेशभूषा, आचरण का ढंग, बातचीत आदि आते हैं और आंतरिक पक्ष का संबंध उसकी मानसिक तथा बौद्धिक विशेषताओं से होता हैं |"[14] व्यक्ति के बाह्य रूप को देखने से उसके आचरण का पता चलता है | लेकिन उसका आंतरिक पक्ष उद्घाटित नहीं होता | आंतरिक पक्ष को जानने के लिए व्यक्ति की मानसिक तथा बौदधिक विशेषताओं को जानना पड़ता हैं | जिसके लिए मनोविज्ञान का सहारा लेना पड़ता है |

नारी के अचेतन मन में कुछ गुत्थियाँ पड़ी हुई हैं | जिसके परिणामस्वरूप नारी क्रियाओं को देखा जा सकता हैं कई बार इन गुत्थियों के कारण नारी कुछ ऐसा कार्य करती है जो उसके हित के विपरीत होता है | इन्हीं कारणों को समझने के लिए इन गुत्थियों को सुलझाना आवश्यक हैं | इन गुत्थियों को सुलझाने का काम 'मनोविज्ञान' करता है |

मनोविज्ञान से अचेतन मन की त्रुटियों का विश्लेषण करके मनुष्य के मस्तिष्क में स्थित अपायकारक गुत्थियों को समझकर हितकारक बदलाव किया जा सकता है |

5.4.1. घुटन :

'बावली' कहानी की सलमा को शादी के बाद सात साल तक कोई बच्चा नहीं होता | सास पोते की रट लगाए रहती है | आस-पड़ोसवाले सलमा को ताने देते हैं |

सास ने बेटे खालिद की दूसरी शादी के लिए लड़कियाँ देखना शुरू किया था | अंतत: सलमा के कहने पर खालिद दूसरी शादी के लिए तैयार हो जाता है | कोई भी औरत यह नहीं चाहती कि उसके पति के प्यार में बँटवारा हो | उसी प्रकार सलमा न चाहते हुए भी खालिद की दूसरी शादी के लिए तैयार हो जाती है | जिससे भविष्य के बारे में सोचने से उसकी आँखों से आँसू निकलने लगते हैं | रात-रात भर वह सो नहीं पाती और न ही उसकी आँखों के आँसू रूकते हैं | फिर भी वह अपना दुख किसी के सामने प्रकट नहीं करती | यह सोचकर वह और भी कमजोर हो जाती है कि कल जब सुहैला घर आएगी तो खालिद, अम्मा का व्यवहार उसके साथ कैसा होगा | इतना सब सोचने के बाद वह अंत में अलग रास्ता चुनना चाहती है, जो एकदम अलग है | वह अपने लिए जीना चाहती है सिर्फ अपने बारे में विचार करना चाहती है | अंदर ही अंदर वह घुटन-भरी जिंदगी जीती है | 'मिस्टर ब्राउनी' कहानी की संतोष स्कॉटलैंड में अपने पति के साथ रहती है | लेकिन वह अपने देश, अपने घर वापस जाना चाहती है | उसे यहाँ से कोई निकाले इससे पहले वह वापस इज्जत के साथ अपने देश जाना चाहती है | उसके बार-बार कहने पर भी उसका पति भूरेलाल उसे देश वापस नहीं ले जाता | वह देश में बढ़ती बेकारी, महँगाई तथा दहशत से अच्छा स्कॉटलैंड में रहना ठीक समझता है | इसलिए वह पत्नी को यही रहने को कहता है | संतोष वापस जाने की रट लगाती है | फिर भी उसे नहीं भेजा जाता | वह घर से आए खत पढ़ लेती है और अकेले में रो देती है | वह धीरे-धीरे घरवालों के बारे में सोचकर, उनकी यादों के कारण कम बोलने लगती है | वह घर से बाहर न निकलकर कमरे में पड़ी रहती है | अंदर ही अंदर घुटती रहती है | चाहकर भी वह देश वापस नहीं जा पाती | वह चाहती है विदेश में ऐशों आराम की घुटन-भरी जिंदगी जीने से बेहतर अपनी मातृभूमि की ओर क्यों न चलें? वहाँ अपने लोग तो रहते हैं |

5.4.2.घृणा :

व्यक्ति के मन में घृणा तब निर्माण होती है जब वह किसी अन्य व्यक्ति के हाथों कोई अनपेक्षित या बुरी घटना घटते देखता है या फिर उस व्यक्ति के साथ अनपेक्षित या बुरी घटना घटती है तब उस व्यक्ति के प्रति घृणा निर्माण होती है | सरयू प्रसाद चौबे के अनुसार - "आनंद एवं अवसाद का अतिरेक, हर्षातिरेक या आनंदातिरेक, अतिरंजित उल्हास, उदासिनता, अवसाद, क्रोध और भय, दुश्चिंता, प्रेम और घृणा |"[15]

व्यक्ति में किसी भी घटना के अतिरेक के कारण आनंद, घृणा, क्रोध, भय तथा प्रेम आदि संवेगात्मक विकारों को देखा जाता हैं |

'चार वहनें शीश महल की' कहानी में चार बहनों के चचेरे चाचा जिन्हें वे अपने सगे चाचा की तरह प्यार करती थी | जिनके दुलार से वे बड़ी हुई थी | एक दिन गड़हों का पैकेट देने छोटी नदीम चाचा के घर गई थी | घर में कोई नहीं यह देखकर नदीम चाचा ने उसके साथ जवरदस्ती करनी चाही | छोटी ने अपने दाँत नदीम के हाथ पर गाड़ दिए | उसके हाथों की पकड़ ढीली होते ही वह भाग गई| लेकिन नदीम चाचा की इस हरकत को उसकी माँ महल्का ने देखा था | तब वह घृणा से बोलती है - "काश! धरती फट जाती और मैं समा जाती उसमें... कम-से-कम यह दिन तो न देखती | लड़कियाँ अपने घर में भी महफूज नहीं है , न बाप-दादा से, न चाचा-भतीजे से... अरे, तुने उसे गोदी खिलाया है |"[16] जिस लड़की को गोदी में खिलाया, लाड़-प्यार से पाला, अपनी बेटी की तरह प्यार किया | उसी के प्रति वासनात्मक दृष्टि से देखना कितना घृणात्मक है | महल्का घृणा और तिरस्कार से उसके साथ पेश आती है | आज कल दुनिया में लड़कियाँ असुरक्षित हैं | चाहे वह बाप-दादा हो या फिर चाचा-भतीजा इन सबसे वह असुरक्षित है | नदीम की इस करतूत के कारण महल्का के मन में उसके प्रति घृणा उत्पन्न होती है | यह बात जब छोटी अपनी बड़ी बहनों को बताती है तो उनके मन में सभी पुरूषों के प्रति घृणा उत्पन्न होती है | जिससे बड़ी सबको अम्मा और दादी के न रहने पर घर में न रूकने को कहती है | चाचा के घर जाने और उनसे बात करने को मना करती है | कई बार ऐसी घटनाएँ घटित होती है, जिससे व्यक्ति के मन में घृणा निर्माण होती है | देवराज उपाध्याय लिखते है "प्राय: ऐसा हो जाता है कि किसी व्यक्ति के प्रेम की तथा किसी के लिए घृणा की भावना अनायास और अकारण उठने लगती है | मन की ऐसी स्थिति स्थानांतरीकरण की विषय मात्र है |"[17] स्थांनातरीकरण के कारण घृणा, प्रेम, वात्सल्य इनमें से कोई भी क्रिया बन जाती है | व्यक्ति के साथ घटित घटना पर यह क्रिया अवलंबित है | नासिरा की कहानियों में घृणा जैसी मानसिक क्रिया मुस्लिम नारी से जुड़ी परिलक्षित होती है |

5.4.3.मानसिक दवंदव :

मनुष्य के मन में अनेक घटनाओं के कारण दवंदव उत्पन्न होता है तब वह यह तय नहीं कर पाता कि कौन-सा रास्ता अपनाया जाए | उसके मन में चल रहे तुफान

को 'द्विधावस्था' तथा 'मानसिक द्वंद्व' कहा जाता है | मनुष्य की जिंदगी में कई बार ऐसे क्षण आ जाते हैं जब वह द्विधावस्था में फँस जाता है | वह उस द्विधावस्था से निकलना चाहता है लेकिन वह तय नहीं कर पाता कि कौनसी राह चुनने से वह सुखी बन जाएगा | इससे बाहर निकलने के लिए वह कभी अपने घरवालों की मदद लेता है तो कभी अपने दोस्तों की सलाह लेता है | कई बार ऐसी स्थिति आती है कि उस वक्त उसे स्वयं ही निर्णय लेना पड़ता है |

'बावली' कहानी की सलमा की शादी खालिद से हो जाती है | लेकिन शादी के सात साल बाद भी वह माँ नहीं बन पाती | जिसके परिणामस्वरूप समाज की प्रताड़ना को उसे सहना पड़ता है | सलमा उसकी सास के कहने पर खालिद को दूसरी शादी करने के लिए तैयार करती है | लेकिन शादी तय होने पर वह यह सोचती है कि शादी के बाद वह क्या करेगी? उसका मन दो राहों पर खड़ा हो जाता है | शादी के बाद वह यही रहेगी? या फिर अम्मा के साथ देहात में रहने जाएगी? इन दोनों में से एक रास्ता उसे चूनना है | फिर भी वह यह तय नहीं कर पाती कि वह क्या करेगी? इसी सोच-विचार से उसकी रातों की नींद हराम हो जाती है | रो-रोकर उसका हाल बेहाल हो जाता है | वह अपना गम छुपाने का बहुत प्रयास करती है | अपने दिल को सामान्य बनाने के लिए वह एक रास्ता चुनना चाहती है, जो एकदम नया है | वह अपने लिए जीना चाहती है | एक बार खुद के लिए जी कर देखना चाहती है | यह अनुभव कैसा है यह देखना चाहती है |

'अपनी कोख' कहानी की साधना शादी के बाद पहली बार लड़की को जन्म देती है | दूसरी बार जब वह गर्भवती होती है तब सास उसकी कोख में पल रहे बच्चे का लिंग जानना चाहती है | वह इस बार लड़का चाहती है | लेकिन साधना की कोख में लड़की है सुनकर वह 'एबॉर्शन' करने के लिए कहती है | लेकिन साधना अपनी ही प्रतिरूप की जान नहीं लेना चाहती | जिसकी वजह से सास का घर में बरताव बदल जाता है | संदीप दो ही बच्चे चाहता हैं | फिर वे लड़का हो या लड़की | साधन अगली बार लड़की होने पर 'एबॉर्शन' करने के बारे में कहती है और तीसरी बार जब साधना गर्भवती होती है तो क्लिनिक जाकर जाँच कर आती है | इस बार लड़का होने की बात वह जान जाती है | लेकिन वह घरवालों से बात छिपाती है कि उसके पेट में लड़का है | उसे यह चिंता लगी रहती है कि "यह लड़का पैदा हुआ तो मेरी दोनों लड़कियों को निगल जाएगा | उसके

आगे सास बेटियों से बरताव ठीक नहीं रखेगी और क्या पता संदीप बेटा पाकर बदल जाए? घर का बदलता स्वरूप क्या होगा? क्या करूँ मैं? सास को यह खुशखबरी दूँ? संदीप को दिया वचन निभाऊँ कि...क्या करूँ?"[18] साधना इस दविधावस्था में फँस जाती है कि वह क्या करें? सास बेटे की खुशखबरी सुनकर फूलों न समाएगी | अपने घर का चिराग पाकर पोतियों को ठीक से न सँभालेगी | साधना ने भी संदीप को वचन दिया था कि दो बच्चों के बाद वह 'ऑपरेशन' कराएगी और सास को शब्द दिया था कि तीसरी बार लड़की होने पर वह 'एबॉर्शन' कराएगी | वह यह नहीं समझ पा रही थी कि सास को दिया शब्द निभाए या फिर पत्नि को दिया वचन निभाए | इस मानसिक दविधावस्था का विपरीत परिणाम साधना के 'हाई ब्लडप्रेशर' में बदल जाता है |

उसकी मानसिक दविधावस्था उसे इतनी बेचैन बनाती है कि वह सख्त बीमार पड़ जाती है | वह सोचती है कि जब बाहरवालों को पता चलेगा कि वह बेटे का 'एबॉर्शन' कर रही है तो सब उसे कोसेंगे | खरी-खोटी सुनाएँगे | लड़के का 'एबॉर्शन' करके वह कैसे खाई में गिरेगी यह बताएँगे | बड़ी हो जाने पर लड़कियों को पता चलेगा कि उनके भाई को उनकी माँ ने मारा है तो उनकी क्या प्रतिक्रिया होगी | भाई के लिए लड़कियाँ माँ को भला-बूरा कहेंगी | लेकिन वह ये न जान पाएगी कि उनकी भलाई के लिए ही साधना ने बेटे का 'एबॉर्शन' किया था | साधना कैसे अपने बुढ़ापे की लाठी खुद तोड़ देगी | ये सब सोच-सोचकर उसका 'ब्लडप्रेशर' बढ़ जाता है | संदीप को उसने यह नहीं बताया कि वह गर्भवती है | यह बात उसे डॉक्टर से पता चल जाती है | वह बेटे को जन्म देकर अपनी लड़कियों के सपनों को नहीं तोड़ना चाहती | मानसिक दविधावस्था के कारण वह बीमार पड़ जाती है और उसकी हालत देखकर संदीप खुद नसबंदी कराता है और साधना का भी 'एबॉर्शन' कर देता है | अत: मानसिक दविधावस्था के कारण मानसिक तथा शारीरिक यातनाओं का शिकार होना पड़ता हैं |

इस पर वैजनाथ प्रसाद लिखते हैं - "आधुनिक मनोविज्ञान यह मानता है कि व्यक्ति अपने कार्यों में स्वतंत्र नहीं है |...मनुष्य के अंदर अवचेतन की अज्ञात रहस्यमयी शक्ति का चक्र चलता है और उसी के अनुसार चलने के लिए वह अभिशप्त है |"[19] आधुनिक मनोविज्ञान के अनुसार व्यक्ति अपने कार्यों में स्वतंत्र नहीं

होता | उसके मन में उसके अवचेतन की अज्ञात शक्ति उसे बेटे को स्वीकार करने नहीं देती | इसलिए तो वह अपनी सास और पति से कोख में लड़का होने की बात छिपाती हैं |

5.4.4.दृढ़ता :

दृढ़ निश्चय के कारण ही व्यक्ति जीवन में सफल होता है | कई बार किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति व्यक्ति के दृढ़ रहने से व्यक्ति अपनी जिंदगीमें बहुत बड़ा दुख उठाता है | व्यक्ति की दृढ़ता पर ही उसका सुख-दुख निर्भर रहता है |

'शामी कागज' कहानी की पाशा का पति मोहसिन मर जाता है | मोहसिन के मरने पर पाशा की दूसरी शादी के बारे में सोचा जाता है | लेकिन पाशा से पूछने की हिम्मत किसी में भी नहीं है | पाशा दूसरी शादी करके जीवन बीताने से अच्छा अकेले ही जीवन बीताना चाहती है | महमूद के समझाने पर भी वह अपना निर्णय नहीं बदलती | वह किसी पर निर्भर रहकर जीवन बीताना उचित नहीं समझती है | वह अपने निर्णय पर दृढ़ है कि उसे दूसरी शादी नहीं करनी है | दूसरी शादी करके वह आराम की जिंदगी बीता सकती है लेकिन वह ऐसा न करके नर्सरी में नौकरी करके अपनी कमाई से अपना खर्चा उठाती है | बुढ़ापे के लिए वह रूपया जमाती है | लेकिन किसी के रहम पर शादी करना उसे पसंद नहीं है | प्रकाशचंद्र मिश्र के अनुसार "भीतर ही भीतर कितने ही उद्वेलन होते रहे परंतु वह अपनी गहराई के कारण ऊपर से शांत और लगभग स्थिर है |उसमें एक आंतरिक दृढ़ता है | जो परिस्थितियों की कड़ी चोटों के बावजूद बिखरता नहीं बल्कि दृढ़तर होता जाता है |"[20] व्यक्ति-दृढ़ता महत्त्व की है | कठिनतम परिस्थितियों में व्यक्ति को सचेत, सजग रहना चाहिए | पाशा के जीवन में उद्वेलन आए हैं मोहसिन की मृत्यु, उसके बाद वह बच्चा चाहती है लेकिन वह भी उसके नसीब में नहीं है | फिर भी वह शांत रहती है | ऊपर से शांत तथा अंदर से स्थिर रहने का वह प्रयास करती है | जिस कारण उन परिस्थितियों में भी वह बिखरती नहीं वह अपने दृढ़तर निर्णय पर बनी रहती है और वह अपना मकान ढूँढ पाती है |

5.4.5. हीनता बोध -

"यथार्थ के संघर्ष के कारण व्यक्ति को आत्मस्थापन का संतोष नहीं मिल पाता और उसमें हीनत्व की भावना विकसित हो जाती है |"[21] व्यक्ति जब यथार्थ से संघर्ष करता है तब वह अपनी आत्म की स्थापना नहीं कर पाता | जिससे वह आनंद का उपभोग

लेना चाहता है; जो संतोष वह पाना चाहता है वह नहीं मिल पाता है | जिससे उसमें हीनत्व की भावना का विकास हो जाता है |

'ख़ुदा की वापसी' कहानी की फरजाना शादी के बाद सुखी जीवन बीताना चाहती है | लेकिन शादी की पहली रात में ही जुबैर उससे झूठ बोलकर 'मेहर' माफ कराता है | तब वह टूट जाती है | वह उस कानून को जानना चाहती है जो जुबैर ने उसे शादी की पहली रात बताया था | जिसके लिए वह मजहब की सारी किताबें पढ़ती है | मौला-मौलवियों से मिलती हैं | इस संघर्ष के बाद उसे पता चलता है कि वह कानून जो जुबैर ने बताया था वह झूठा था | यथार्थ को सुनकर उसके आत्मसम्मान को ठेंस पहुँचती है | वह अपने आत्मा की स्थापना नहीं कर पाती | जिस कारण उसमें हीनत्व की भावना का विकास हो जाता है |उसे अपने आत्मसम्मान से संतोष नहीं मिल पाता | मजहब की किताबों से वह संतुष्ट नहीं हो पाती | जुबैर के झूठ से उसके मन में हीनत्व की भावना निर्माण हो जाती है और वह उसे छोड़कर मायके चली जाती है |

5.4.6.अहं की भावना :

'अहं' व्यक्ति मन का एक हिस्सा है | डॉ.शशिभूषण सिंहल के अनुसार - "जब व्यक्ति दूसरों से अपनी तृप्टि के लिए उनके व्यक्तित्व की बली चाहता है तो यह उसका अहंभाव है |"[22] व्यक्ति का स्वार्थि होना ही अहंभाव का प्रमुख कारण बनता है | अहंभाव के कारण मनुष्य के जीवन पर बुरा प्रभाव पड़ता है | इससे दुष्परिणामों का भी उद्घाटन होता है | ये दुष्परिणाम अहंभाव का नकारात्मक परिणाम होता है |

'पत्थर गली' कहानी की फरीदा अपने घर की सारी जिम्मेदारियाँ निभाती हैं और साथ में अपना कॉलेज भी पूरा करती है| इसके विपरीत उसका भाई घर से पैसे लेकर दोस्तों के साथ ऐश करता है और वह अपनी बहन पर रोब भी जमाता है | वह कक्षा में दो-दो बार फेल हो जाता है लेकिन फरीदा को उसके वर्तन के बारे में सीखाता है |उसके हर काम को नकारता है | फरीदा को वह ड्रामे में हिस्सा नहीं लेने देता क्योंकि वहाँ लड़के-लड़कियों को एक साथ रहना पड़ता है |

उसके ऐसे वर्तन से ही फरीदा में अहंभाव का विकास होता है | भाई में हीनावस्था का विकास हो गया है | जिस कारण वह हर बार फरीदा को भाषण देने लगता है | वह कहता है - "लड़कियों को घर में रहना चाहिए | कमर पतली और हाथ मुलायम

रखने की कोशिश करनी चाहिए। मर्दनुमा लड़कियाँ या औरतें अच्छी नहीं होती है।"[23] जो भाई लड़कियों को घर में कैसे रहना चाहिए? यह सीखाता है, वह भाई बहन को वैसे रहने में मदद नहीं करता।उस वक्त वह यह भूल जाता है, जब फरीदा बाजार में जाकर घर के धान बेचती है तब खानदान की इज्जत नहीं जाती। वह जब घर के सारे काम करती है तब फरीदा के नरम हाथों के बारे में भाई के मन में विचार नहीं आता है। वह अपनी हीनावस्था को छिपाने के लिए फरीदा पर रोब जमाता है। दशरथ ओझा लिखते हैं "फ्रायड का दूसरा अभिप्राय उस सचेष्ट नियंत्रण से भी है, जो मन की कतिपय वृत्तियों के प्रत्यक्षिकरण में भी बाधक एवं उनकी क्रियाशीलता में भी अवरोधक होता है।"[24] अहंभाव के कारण मनुष्य की वृत्तियों में भी बाधा उत्पन्न होती है।

अहंभाव जब अहंकार में परिवर्तित होता है तो उसके परिणाम नकारात्मक होते हैं। उसी प्रकार भाई के बार-बार टोकने के परिणामस्वरूप फरीदा के मन में अहंकार निर्माण होता है। जब भाई फरीदा को आगे पढ़ने के लिए मना करता हैं तब फरीदा जो कभी मुँह से शब्द भी न निकालती वह शेरनी की तरह बोल उठती है " तो फिर आपको भेजा जाता? आप कौन होते है एतराज करने वाले। पैसा वसुलिए और जाइए यहाँ से।"[25] किसी भी बात को झेलने की नारी की एक हद होती है। जिसके समाप्त होने पर नम्र नारी शेरनी बन जाती है। भाई है जो खुद काम नहीं करता और न ही पढ़ाई ठीक ढंग से करता है लेकिन फरीदा को भी वह ठीक से पढ़ने नहीं देता है। जिससे फरीदा को क्रोध आता है उसे लगता है कि भाई सिर्फ पैसे वसुल करके चला जाए। उसकी शिक्षा पर रोक लगाने का उसे अधिकार नहीं है। भाई को उल्टा जवाब देने से भाई की और फरीदा की बहस हो जाती है। भाई फरीदा की किताबें उठाकर बाहर फेंक देता हैं। फरीदा उन किताबों के पन्ने गुस्से से फाड़ देती हैं। जिसे देखकर भाई अपना संयम खोकर उसके गाल, पीठ पर मारने लगता हैं। जिससे फरीदा के नाक और मुँह से खून निकलने लगता है।

'खुदा की वापसी' कहानी की फरजाना को जुबैर शादी की पहली रात झूठ बोलकर उससे 'मेहर' माफ करवाना है। जिससे फरजाना के स्वाभिमान को ठेंस पहूँचती है। वह जुबैर से उसके कानून के बारे में पूछती है जिसके नाम पर उसने मेहर माफ करवाया था। तब जुबैर यह कहता है कि उसने दोस्तों के कहने पर वह शरारत की थी

और उसके लिए वह फरजाना से माफी भी माँगता है, फिर भी वह अपने मायके चली जाती है | वह उसे बुलाने तक न आने को कहती है | अंत तक स्वाभिमानी फरजाना उसे बुलाती नहीं | उसके न बुलाने पर भी जुबैर से आए ऐसा फरजाना का मन चाहता है | जुबैर फरजाना के बुलावे का इंतजार करता है | साधना अग्रवाल का कथन है - "अहंभाव स्वाभिमान के स्तर तक उचित है, किंतु जैसे ही वह अहंकार की श्रेणी में आता है, वह बुराई में परिणत होता है |"[26] अहंभाव स्वाभिमान के स्तर तक उचित है क्योंकि स्वाभिमान ही व्यक्ति का व्यक्तित्व बनाने में महत्त्वपूर्ण सिद्ध होता है | लेकिन वही अहंभाव अहंकार के कारण किसी परिवार विघटन का कारण वन जाता है | फरजाना का स्वाभिमान अहंकार में परिवर्तित होने के कारण ही वह जुबैर को बुला नहीं पाती और बुलावा न भेजने के कारण जुबैर भी उसे लेने नहीं जाता | परिणामत: दोनों एक-दूसरे को चाहकर भी पास न आ सके | जीवन में कुछ पल तक अहं ठीक है लेकिन समय के साथ जीवन में 'कंप्रोमाइज' की जरूरत होती है | वह न होने से फरजाना और जुबैर एक न हो सके |

5.4.7. विद्रोही -

व्यक्ति अपने दिल में बहुत से गम छुपाए रहता है | बहुत से काम वह अपनी इच्छा के विरोध में करता है | जव अत्याचारों का अथवा उसके मन के विरोधी घटनेवाली घटनाओं का सिलसिला वढ़ता है तव उसके विरोध में वह विद्रोह कर उठती है और अपनी इच्छा की पूर्ति करती है | आज के युग में शिक्षा के कारण नारी में परिवर्तन होने लगा है | वह अपने पर होनेवाले अन्याय, अत्याचार का विरोध करने लगी है | नारी अपनी मुक्ति के लिए प्रयास करने लगी है | अपनी मुक्ति करने में वह कुछ अंश में सफल भी हो रही है | ऐसी ही शिक्षित, नये विचारोंवाली नारियों का चित्रण नासिरा ने अपनी कहानियों में किया है |

'अपनी कोख' कहानी की साधना आगे पढ़ना चाहती है | आय.ए.एस. वनने का उसका सपना था लेकिन घरवाले उसकी शादी संदीप से कर देते हैं | इच्छा के विरूद्ध उसे शादी करनी पड़ती है | शादी के वाद भी वह पढ़ना चाहती है | लेकिन गर्भ वती होने के कारण उसकी पढ़ाई वंद हो जाती है | धीरे-धीरे वह घर-गृहस्थी में व्यस्त हो जाती है | जिससे वह पढ़ नहीं पाती | पहली लड़की पैदा हो जाती है | सास पोता चाहती है | साधना को दूसरी वार भी लड़की होती है | वह अपनी लड़कियों के माध्यम से

आय.ए.एस. का अपना सपना पूरा करना चाहती है | वह लड़कियों को आय.ए.एस. और पुलिस कमिश्नर बनाना चाहती है | जब तीसरी बार वह गर्भवती होती है | तब उसके पेट में लड़का है | इस बात का उसे पता चलता है लेकिन यह बात अपने पति और सास से छुपाकर ही रखना पसंद करती है |

शादी से पहले पढ़ाई के कारण शादी के लिए विद्रोह किया था | शादी के बाद बच्चे न हो इसलिए विद्रोह किया था लेकिन किसी ने उसकी एक न सुनी | इस बार भी वह विद्रोह करती है | वाजपेयी लिखते है "विद्रोह किसी वस्तु या स्थिति के प्रति नहीं, संपूर्ण वस्तुओं और सारी स्थितियों के प्रति | सृष्टि के प्रति, क्योंकि वह अधूरी और अपूर्ण है; समाज के प्रति क्योंकि वह संकीर्ण है और विकास को विघातक है | सभी संस्थाओं के प्रति, समस्त रीतियों के प्रति, जीवन-मात्र के प्रति विद्रोह क्रांतिकारी की स्वाभाविक प्रवृत्ति है |"[27] विद्रोह करनेवाले व्यक्ति यह सोचकर विद्रोह नहीं करते कि यह विद्रोह इस व्यक्ति के या संस्था के प्रति है | बल्कि विद्रोह करनेवाला व्यक्ति समस्त वस्तुओं, रीतियों, व्यक्तियों तथा संस्थाओं के प्रति विद्रोह करता है | रीती-रिवाजों, रूढ़ी-परंपराओं के प्रति भी वह विद्रोह करता है | विद्रोह करनेवाले क्रांतिकारी की यही स्वाभाविक प्रवृत्ति है | वह संपूर्ण वस्तुओं के सारी स्थितियों के प्रति, सृष्टि के प्रति, समाज के प्रति तथा समस्त रीति-रिवाजों के प्रति क्रांतिकारक विद्रोह करता है |

साधना अपनी लड़कियों के सपनों को पूरा करने लिए सबसे बड़ा विद्रोह करती है | वह अपने बेटे को जन्म नहीं देती 'एबॉर्शन' करती है | आज तक की मान्यताओं के प्रति विद्रोह करती है | कुल का चिराग बेटा ही हो इसके प्रति विद्रोह सृष्टि के प्रति भी जिसने उसकी कोख में बेटा दिया था उसे त्यागकर वह विद्रोह करती है | साधना का चरित्र प्रतिभासंपन्न, जागरूक तथा सुसंस्कृत, विद्रोहिणी नारी के रूप में सामने आता है | पढ़ी लिखी होने के कारण वह भला-बूरा सोच सकती है | पुरूष की दासता से अपनी बेटियों को मुक्त करना चाहती है |

वह नहीं चाहती की बेटे के कारण उसकी बेटियों के सपने अधूरे रह जाए | बेटियों के लिए देखे सपनों को पूरा करने में बेटा साधना को दिक्कत लगता है | इसलिए वह बेटे को जन्म न देकर 'एबॉर्शन' करती है | एक समग्र विद्रोही भावना नासिरा की नारी में दिखाई देती है | वह व्यक्ति, परिवार और व्यवस्था के विरोध में विद्रोह करती है |

5.4.8. काम वासना का उदात्तीकरण :

मनुष्य की कुछ मर्यादाओं के कारण उसकी नैसर्गिक प्रवृत्तियाँ दमित रह जाती है | उन नैसर्गिक प्रवृत्तियों के समाजानुमोदित रास्तों पर चलकर मनुष्य विवाह करता है | विवाह के बाद पति-पत्नी अपनी काम की पूर्ति कर सकते हैं | उदात्तीकरण मनुष्य का मुख्य आधार है | व्यक्ति अपना मानसिक उदात्तीकरण समाजानुमोदित मार्ग से करता है तो वह उदात्तीकरण कल्याणकारी सिद्ध होता है | 'काम' की पूर्ति के लिए व्यक्ति विवाह करता है | कई बार काम का उदात्तीकरण करने के लिए गलत मार्ग को भी अपनाता है |

हर मनुष्य में काम वासना होती है, जिसकी पूर्ति करने के लिए व्यक्ति समाजानुमोदित मार्गो का अवलंब करता हैं | नैसर्गिक वासनाओं की दिशा बदलकर संतानोत्पत्ति के रूप में उनका विकास होता है जिससे समाज विकास के लिए प्रेरणा मिलती है | कई बार मनुष्य के मन में किसी व्यक्ति के प्रति प्रेम होता है | यही प्रेम किसी कला में बदल जाता है |

कई बार यह उदात्तीकरण व्यक्ति के परोक्ष रूप में होने से व्यक्ति के जीवन में हानि की भी संभावना होती है | जैसे किसी के प्रति दमित प्रेम की पूर्ति न होने से उसकी हत्या कर देना जैसी घटनाएँ हम देखते हैं | दमित प्रेम का उदात्तीकरण कभी उन्नयन की दिशा में होना है तो कभी हानिकारक सिद्ध होता है |

फ्रायड काम को उदात्तीकृत मानता है | कई बार काम का उदात्तीकृत रूप गलत ढंग से निष्पण होता है | दमित वासनाओं के कारण व्यक्ति में मानसिक विकृतियों का निर्माण होता हैं | व्यक्ति अपनी काम वासना की पूर्ति करने के लिए समलिंगी संबंध भी रखता है या किसी औरत पर जबरदस्ती करता है | दमित वासनाओं के कारण ही व्यक्ति में सामजिक विकृतियों का निर्माण होता है |

'संगसार' कहानी की आसिया शादी के बाद उसके मन में स्थित काम की पूर्ति करती है | लेकिन फिर भी वह अन्य व्यक्ति की ओर आकृष्ठ हो जाती है | वह अपने प्रेमी के साथ रहकर काम का उदात्तीकरण करना चाहती है जो समाजमान्य नहीं है | आसिया के इस प्रकार से काम का उन्नयन करना उदात्तीकरण न समझकर हानि समझा जाता है | पर पुरूष से अवैध संबंध रखने के जुर्म में उसे गिरफ्तार किया जाता है | जिस कारण उसे मौत की सजा दी जाती है |

'जोड़ा' कहानी के चित्रकार का सारा परिवार एक ट्रेन हादसे में मर जाता हैं | उसके बाद उसे लंबी बीमारी जकड़ लेती है | डॉक्टरों के अथक प्रयास के बाद वह ठीक हो जाता है | मानसिक उदात्तीकरण के लिए वह चित्रकार बन जाता है | चित्रकारिता में वह नाम कमाता है | एक पार्टी में उसकी मुलाकात एक विदेशी महिला चित्रकार से हो जाती है | एक दिन चित्रकार उसके घर उसे मिलने जाता है | तब एक-दूसरे के संपर्क में आने के कारण उनकी काम वासना उद्दीप्त हो जाती है | विदेशी महिला चित्रकार उसकी वासना का शमन करना चाहती है | किंतु फोन की घंटी तथा दरवाजे की बेल के बजने से चित्रकार खुद को सँभाल लेता है और वह उसके घर से निकल जाता है | विदेशी महिला चित्रकार अपनी माँ की नाजायज औलाद है जो भारत घूमने आई है | यहाँ उसको पहचाननेवाला कोई नहीं है और विदेश में देखनेवाला भी कोई नहीं है |उसके मन में काम वासना का दमन हुआ है | चित्रकार के माध्यम से वह अपनी काम वासना की पूर्ति करना चाहती है | इस प्रकार वासना पूर्ति करना उसे गलत या अनैतिक नहीं लगता | वह अपने शरीर की भूख मिटाना चाहती है | लेखिका इन घटनाओं के द्वारा बदलते जीवन का तथा आदिम भावनाओं का उदात्तीकरण होता हुआ दिखाती है |

5.4.9. पूर्णत्व की खोज :

दुनिया का कोई भी व्यक्ति परिपूर्ण नहीं होता | हर एक व्यक्ति में कोई -न-कोई कमी जरूर होती है लेकिन सभी को अपने से दूसरा व्यक्ति परिपूर्ण लगता है | अपने पासवाले व्यक्ति से जादा अपने से दूर के व्यक्ति जादा अच्छे लगते है लेकिन जब वह व्यक्ति अपने संपर्क में आता है तब उसकी कमियाँ नजर आती है |उसी प्रकार एक पति को अपनी पत्नी से अधिक दूसरे की पत्नी सुंदर, सुशील या होशियार नजर आती है | तो पत्नी को अपने पति में कमियाँ नजर आती है | जो दूसरे व्यक्ति में नहीं है | पत्नी अथवा प्रेमी एक-दूसरे की कमियों को ढूँढने में लगें रहते हैं | जिससे अपनी कमियों को पहचान नहीं पाते हैं |

दूसरों की अच्छाई उन्हें अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है लेकिन उनके संपर्क में आने से उनकी बुराईयाँ भी नजर आती है | याने दुनिया में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो परिपूर्ण हो | अत: व्यक्ति को स्वीकार करते समय उसके गुण-दोषों सहित स्वीकार करना पडता है | जिससें उसमें पूर्णत्व का एहसास हो जाए |

'दूसरा ताजमहल' कहानी की नयना का डॉ.नरेंद्र के साथ विवाह हो जाता है | विवाह के वाद वह अपनी पत्नी को समय नहीं दे पाता है | बच्चे भी पढ़ाई के लिए विदेश चले जाते हैं | जिससे नयना अकेली रह जाती है | तभी भारत के प्रसिद्ध वास्तुविशारद के संपर्क में नयना आ जाती है |उसकी ओर नयना आकृष्ट हो जाती है | तब वह नयना को एक परिपूर्ण व्यक्तित्व लगता है | जिस कारण वह नरेंद्र तथा बच्चों को छोड़कर दिल्ली से बंबई चली आती है | नरेंद्र उसे समय नहीं दे पाता है | वह बात तक करने के लिए समय नहीं निकाल पाता है | लेकिन रविभूषण नयना से रात-रात भर टेलिफोन से बात करता रहता है | जब नयना रविभूषण से मिलने बंबई जाती है तो रविभूषण के संपर्क में आने से उसे पता चलता है कि रविभूषण नशे में उसके साथ टेलिफोन पर बातें करता है वह बातें वह सुबह भूल जाता है | रविभूषण में पूर्णत्व देखकर वह बंबई आई थी लेकिन उसमें कमियाँ ही नजर आती है | तब वह फिर वापस दिल्ली चली जाती है |

5.4.10. औरत बने रहना -

प्रकृति ने हर व्यक्ति को नई - नई जिम्मेदारियों में जकड़ रखा है |उसमें माँ-बाप, भाई-बहन आदि रिश्तों में उनकी जिम्मेदारियों को विभाजित किया है | माँ को बच्चों का पालन-पोषण करना है | पिता को उनकी रक्षा करनी है | बेटों को माँ-बाप की सेवा करनी है | बेटी को अपने सास-ससुर को सँभालना पड़ता है | इन कर्तव्यों में जकड़े मनुष्य को हर हालत में अपना कर्तव्य निभाना है | ये सारे कर्तव्य कहीं लिखित तो नहीं होते वह संस्कारगत परंपराओं से प्राप्त होते है | डॉ.श्यामसुंदर दास के अनुसार - "मनोविज्ञान के बढ़ते हुए विश्लेषण ने व्यक्ति के असामान्य व्यवहारों का अध्ययन कर यह स्पष्ट कर दिया है कि हर व्यक्ति अपने जीवन-व्यवहारो में कहीं असामान्य होता है | और उसके व्यवहारों एवं आचरणो में नहीं होती |"[28] मनोविज्ञान के अध्ययन से जो बात सामने आयी है | उसमें असामान्य मनुष्य के व्यवहारों एवं आचरणो में संगति नहीं होती | सामान्य मनुष्य के व्यवहार और आचरण में समानता होती है |

'तीसरा मोर्चा' कहानी की औरत के बच्चों को सुरक्षा पुलिस मार देते है और उस औरत पर जबरदस्ती कर उसे फेंक देते है | किंतु वह औरत होश में आने पर अपनी जान बचाकर निकलना नहीं चाहती | वह अपने पति की राह देखना चाहती है |

अपने मारे गए बच्चों को दफनाना अपना कर्तव्य समझती है | सामान्य औरत लज्जा के कारण खुदखुशी करती है या फिर सबकुछ छोडकर वहाँ से कई दूर चली जाती है | किंतु वह औरत वहाँ से भागना या मुँह छिपना नहीं चाहती | वह औरत बनकर जीना चाहती है | वह पत्नी है इसलिए पति का इंतजार करना चाहती है | माँ है इसलिए अपने बच्चों को दफनाना अपना कर्तव्य समझती है | वह औरत बनकर जीना चाहती है | प्राप्त परिस्थिति में वह हारती नहीं है |

निष्कर्ष :

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते है कि नासिरा शर्मा ने अपनी कहानियों में मुस्लिम नारी के विभिन्न महत्त्वपूर्ण और अलग विषयों का चित्रण किया है | उन्होंने नारी मन की लगभग सभी वृत्तियों का अंकन करने का प्रयास किया है | मनोविश्लेषण करनेवाले इस विज्ञान का कार्य सामान्य व्यक्ति की असामान्यता को चित्रित करना रहा है | नासिरा शर्मा ने भी अपनी कहानियों के माध्यम से नारी की असमान्यता को चित्रित किया है |

नासिरा खुद एक स्त्री होने के कारण नारियों के अंतर्मन में चल रहे विचारों को अच्छी तरह पहचान सकी है | सचमुच उन्होंने नारियों के अंतर्मन में झाँककर देखा है | नासिरा ने नारी मन के विविध पहलुओं को सामने लाया है | इन पहलुओं को सामने लाते वक्त जो विविध समस्याएँ सामने आई उन सभी मनोदशाओं का यथार्थ रूप में अंकन किया है | लेखिका ने नारी की विविध मनोवृत्तियों को पहचानकर उनके अंतर्मन को हमारे सामने रखा है; जो आम भारतीय नारी की स्थितियाँ है | उससे क़हीं दर्दनाक स्थितियों का सामना नासिरा की नारी पात्रों को करना पड़ता है |

नारी मन की विभिन्न प्रवृत्तियाँ नासिरा को मिली है |उनमें अहं की भावना, घृणा, घुटन, कामवासना का उदार्त्तीकरण, मानसिक दवंदव, हीनताबोध, दृढता, विद्रोह, पूर्णत्व की खोज, औरत बने रहना आदि मनोविज्ञान से जूड़ी बातें है | नासिरा शर्मा ने विवेच्य कहानियों में अहं की भावना को सबसे अधिक महत्त्व दिया है | नारी चरित्रों को देखने पर इस वात का पता चलता है कि कहानियों में सबसे अधिक सलमा, साधना, पाशा, आसिया का मनोविश्लेपण हुआ है.| मुस्लिम नारी को परपराओं, रूढ़ियों और बंधनों के कारण अपने स्वतंत्र अस्तित्व को भूलना पड़ता है | वंधनों में जकड़ने के कारण वह

अपना मन भी व्यक्त नहीं कर पाती है | लेकिन जब किसी बात की हद हो जाती है तब वह अपने अचेतन मन में स्थित सभी भावनाओं को प्रस्फुटित कर देती है | तब उसके अचेतन मन में स्थित भावनाएँ सबके प्रति विद्रोह कर उठती है |

नारी मन का विश्लेषण करने के पीछे नासिरा का लक्ष्य उन नारियों की विशेष प्रवृत्तियों को दिखाना है; जो किसी विशेष परिस्थिति में कौन-सा आचरण उनके द्वारा हुआ है, इसका यथार्थ चित्रण उनका उद्देश्य रहा है | परिणामत: उन आम मुस्लिम नारियों का सही चित्रण हमारे सामने प्रस्तुत हो जाता है कभी-कभी परिस्थिति के विपरीत आचरण भी नारियाँ करती है | जैसे नारी की कामवासना की तृप्ति विवाह के बाद भी नहीं हो जाती | नौकरी, व्यवसाय अथवा शिक्षा के कारण उसकी कामवासना की भावना को दबाये रखा जाता है | लेकिन इसी भावनाओं को दबाए रखने के कारण एक दिन वह भावनाएँ उद्वेलित हो उठती है | वह उद्वेलन हितकारक न होकर अहितकारक साबित होता है | अत: इन कारणों को ढूँढने का सफल प्रयास भी नासिरा ने किया है | नासिरा ने अपनी विवेच्य कहानियों में जिन चरित्रों के अलग-अलग पहलूओं को हमारे सामने रखा है | उन चरित्रों की मनोवैज्ञानिकता को समझने में भी मदद मिलती है | अत: मुस्लिम नारी पुरूष प्रधान संस्कृति के दबाव में है | उसे अन्य जाति-धर्मो की नारियों की तरह आजादी नहीं हैं | फिर भी वह बदलते आधुनिक जीवन का लाभ उठाकर अपना अलग अस्तित्व बनाए रखना चाहती है और उसकी वही कोशिश भी है |

संदर्भ :

1. अमृतलाल नागर:व्यक्तित्व, कृतित्व एवं सिद्धांत - डॉ.बन्ना सूदेश, पृष्ठ-276-277
2. सामान्य मनोविज्ञान - डॉ.माथूर एस.एस., पृष्ठ-3
3. आधुनिक हिंदी कथा- साहित्य और मनोविज्ञान - डॉ.उपाध्याय देवराज, पृष्ठ-2
4. हिंदी कहानी मनोविज्ञान और हिंदी एकांकी - रोहतगी मिथिलेश , पृष्ठ-1
5. हिंदी कथा-साहित्य और मनोविज्ञान - डॉ.उपाध्याय देवराज, पृष्ठ-40
6. आधुनिक हिंदी शब्दकोश - चातक गोविंद, पृष्ठ-418
7. हिंदी शब्दसागर भाग - 8 - डॉ. दास श्यामसुंदर, पृष्ठ-790

8. दिनमान हिंदी शब्दकोश - श्री.शरण, पृष्ठ-315

9. A Dictionary of Psychology – James Drever, Page-232

10. Psychology – Wood Worth, Page-4

11. Educational Psychology – Charls E. Skinner, Page-1

12. सामान्य मनोविज्ञान - डॉ.माथूर एस.एस. , पृष्ठ-26-27

13. हिंदी कहानियों में व्यक्तित्व विश्लेषण - शर्मा राजेंद्र प्रसाद , पृष्ठ-67

14. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत - डॉ.गुप्त शांतिस्वरूप, पृष्ठ-366

15. असामान्य मनोविज्ञान और आधुनिक जीवन - चौबे सरयू प्रसाद, पृष्ठ-352-359

16. दस प्रतिनिधि कहानियाँ - शर्मा नासिरा, पृष्ठ-118-119

17. आधुनिक हिंदी कथा साहित्य और मनोविज्ञान - उपाध्याय देवराज , पृष्ठ-55

18. दस प्रतिनिधि कहानियाँ - शर्मा नासिरा, पृष्ठ-102

19. भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में युग चेतना - डॉ.शुक्ल वैजनाथ प्रसाद , पृष्ठ-55

20. अमृतलाल नागर का उपन्यास साहित्य - मिश्र प्रकाशचंद , पृष्ठ-211

21. हिंदी साहित्य कोश भाग - 1 , पृष्ठ-616

22. हिंदी उपन्यास की प्रवृत्तिया - डॉ.सिंहल शशिभूषण, पृष्ठ-213

23. शीर्ष कहानियाँ - शर्मा नासिरा , पृष्ठ-63

24. समीक्षा शास्त्र - डॉ.ओझा दशरथ , पृष्ठ-32

25. शीर्ष कहानियाँ - शर्मा नासिरा , पृष्ठ-68

26. वर्तमान हिंदी महिला लेखन और दाम्पत्य जीवन - अग्रवाल साधना , पृष्ठ-40

27. आधुनिक साहित्य - डॉ.वाजपेयी नंददुलार, पृष्ठ-175

28. साहित्यालोचन - डॉ.दास श्यामसुंदर , पृष्ठ-48